❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 26
एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 मई, 2024
से रविवार 19 मई, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081
सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये
दूरभाष: 23360150
ई-मेल :
aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -
www.thearyasamaj.org/
aryasandesh

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष : प्रान्तीय सभाओं की दो दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न

भारतभर के प्रमुख अधिकारियों एवं आर्य कार्यकर्ताओं की रही भागीदारी

हर स्तर पर 200 नए परिवारों तक पहुंचने के महा सम्पर्क अभियान का हुआ शुभारम्भ

अधिकाधिक लोगों तक पहुंचने का संकल्प लें आर्यजन – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्व.सभा

200 लोगों तक जरूर पहुँचे, मैं भी दो सौ लोगों से सम्पर्क अवश्य करूँगा – सुरेन्द्र कुमार आर्य, अध्यक्ष, 200वीं जयन्ती एवं 150वां स्थापना दिवस आ.समिति

दो दिवसीय संगोष्ठी के अवसर पर उपस्थित प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को सम्बोधित करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी साथ में हैं श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

'वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः – हम राष्ट्र को जगाने वाले पुरोहित बनें' की भावना के अनुरूप

राष्ट्रवाद एक चिन्तन समारोह सम्पन्न

राष्ट्र निर्माण का यज्ञ है लोकतन्त्र एवं मतदान – राष्ट्र को मजबूत करने हेतु आर्यजन अवश्य करें मतदान

महर्षि के विचारों को अपनाने से होगा देश का सुधार – स्वामी सच्चिदानन्द, युवा आर्य संन्यासी

आधुनिक भारत के निर्माता थे महर्षि दयानन्द सरस्वती – सुधांशु त्रिवेदी, राष्ट्रीय प्रवक्ता, भाजपा

आन्दोलनकारी है आर्यसमाज का संगठन – ओ.पी. धनखड़

राष्ट्र भक्ति सिखाते हैं – आर्य समाज के सिद्धान्त – रविदेव गुप्त

राष्ट्र की उन्नति है आर्य समाज की प्राथमिकता – विनय आर्य

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का संपूर्ण चिन्तन और सेवा कार्य मानव समाज और राष्ट्र के उत्थान का ऐतिहासिक संदेश है। महर्षि के कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश से लेकर गो करुणानिधि आदि समस्त साहित्य में स्वदेश, स्वदेशी, राजा, प्रजा, गुरु, शिष्य, माता, पिता, धर्म, अधर्म, शिक्षा, संस्कार,

कृषि, व्यापार, प्रसाशन आदि की समस्त तर्क युक्ति और प्रमाण के साथ शिक्षाऐं दी गयी है। इसलिए महर्षि के प्रति आधुनिक भारत का निर्माता और महान समाज सुधारक, महान राष्ट्र भक्त, महामानव आदि समस्त विशेषण छोटे पड़ जाते हैं। महर्षि की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस की दो वर्षीय श्रृंखला में 9 मई 2024 को

दीप प्रज्ज्वलन के साथ समारोह का शुभारम्भ सर्वश्री सुधांशु त्रिवेदी, ओ.पी. धनखड़, वीरेन्द्र सचदेवा, योगेश आत्रेय, जोगेन्द्र खट्टर, सुरेशचन्द्र गुप्ता एवं इस अवसर पर आर्यजनों से भरा अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर का हॉल

– शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

देववाणी-संस्कृत

किस पाप से तेरे दर्शन नहीं होते

वेद-स्वाध्याय

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षुः उपो एमि चिकितुषो वि पृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुः अयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते।। - ऋ. 7/86/3
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता-**वरुणः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **वरुण**=हे पापनिवारक देव! **तत् एनः पृच्छे** = मैं उस पाप को तुझसे पूछता हूँ (जिसके कारण मुझे तुम्हारा दर्शन नहीं हो पाता) **दिदृक्षुः** = मैं तुम्हारा दर्शनाभिलाषी हूँ **वि पृच्छम्** = इस विषय में विविध प्रश्न पूछने के लिए मैं **चिकितुषः** = विद्वानों के **उपो एमि** = पास जाता हूँ, परन्तु **कवयः चित्** = वे सब ज्ञानी पुरुष भी **समानं इत् में आहुः** = मुझे एक ही उत्तर देते हैं- एक ही बात कहते हैं- कि "**अयं वरुणः ह** = निश्चय से यह वरुणदेव ही **तुभ्यं हृणीते** = तुझसे अप्रसन्न है; उसे प्रसन्न कर!"

विनय-हे प्रभो! मैं तेरे दर्शन पाने के लिए व्याकुल हूँ। तुझसे साक्षात् मिलने के लिए दिन-रात प्रतीक्षा में हूँ। इसके लिए यत्न करते हुए बहुत दिन हो गये। ऐसा एक भी साधन नहीं छोड़ा जो तुझसे मिलानेवाला प्रसिद्ध हो। कठोर-से-कठोर तप बड़े आनन्द से किये हैं। तो अब कौन-सा पाप रह गया है जिससे तुम्हारे चरणदर्शन नहीं हो पाते? हे वरुण! तुमसे ही पूछता हूँ, मुझे मालूम नहीं। मुझे मालूम होता तो मैं कब का प्रतीकार कर चुका होता। हे पाप-निवारक! तुम ही मुझ दर्शन-पिपासु को वह मेरा अपराध बतलाओ जिससे अप्रसन्न होकर तुम मुझे दर्शन नहीं देते। जिन्हें मैं मनुष्यों में ज्ञानी, भक्त, विद्वान्, महात्मा देखता हूँ उन सबके पास जाता हूँ और जाकर यही पूछता हूँ कि मुझे वरुणदेव के दर्शन क्यों नहीं होते? परन्तु वे सब क्रान्तदर्शी महात्मागण भी मुझे एकस्वर से यही बतलाते हैं कि वह वरुणदेव ही तुझसे नाराज है। वे सब सच्चे ज्ञानी मुझे यही एक उत्तर देते हैं। तो, हे देव! या तो मेरा पाप मुझे दिखला दो, अपनी अप्रसन्नता का कारण बतला दो, नहीं तो मुझे दर्शन दे दो। हे मेरे स्वामिन्! जब मुझे अपने पाप का पता ही न लगेगा तो मैं उसका प्रतीकार कैसे कर सकूँगा? मैं तुम्हें प्रसन्न करके छोड़ूँगा। अपने पापों के प्रतिविधात के लिए मैं घोर-से-घोर प्रायश्चित्त करने को तैयार हूँ। अपने को पूरी तरह पवित्र कर डालने के लिए आज मैं क्या नहीं कर डालूँगा! मैं अब तुझसे मिल जाने के लिए व्याकुल हो उठा हूँ। इसलिए, हे अन्तर्यामी प्रभो! मैं तुझसे अपने पापों को जानना चाहता हूँ। मेरे पापों के सिवाय इस संसार में और कोई वस्तु नहीं है जो अब मुझे तुमसे मिलने से रोक सके।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन मामला - आई.एम.ए.-पतंजलि आयुर्वेद का विवाद

क्या आयुर्वेद को बदनाम कर मोटा मुनाफा कमाती हैं फार्मा कम्पनियां?

.....भ्रामक विज्ञापन मामले की सुनवाई के दौरान पतंजली को माफीनामा लिखने के साथ-साथ सुप्रीम कोर्ट ने इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन को भी कुछ नसीहतें दी थीं। कोर्ट ने कहा कि इंडियन मेडिकल एसोसिएशन आयुर्वेदिक दवाओं पर सवाल उठाने के साथ साथ अपने डॉक्टरों पर भी विचार करना चाहिए, जो अक्सर मरीजों को महंगी और गैर-जरूरी दवाइयां लिख देते हैं। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन से ये भी कहा था कि अगर आप एक उंगली किसी की ओर उठाते हैं, तो चार उंगलियां आपकी ओर भी उठती हैं।.....

.....देश में करीब इनमें 90 फीसदी से ज्यादा प्राइवेट कंपनियां हैं। इन प्राइवेट कंपनियों के दांव-पेंच इतने शक्तिशाली और सरकार के कानून इतने कमजोर हैं कि भारत में मरीजों का मर्ज से पीछा छूटने के बाद भी महंगी दवाओं का दर्द सालों-साल सालता रहता है। .....

हाल ही में पतंजलि के भ्रामक विज्ञापन मामले की सुनवाई के दौरान पतंजली को माफीनामा लिखने के साथ-साथ सुप्रीम कोर्ट ने इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन को भी कुछ नसीहतें दी थीं। कोर्ट ने कहा था कि इंडियन मेडिकल एसोसिएशन को आयुर्वेदिक दवाओं पर सवाल उठाने के साथ साथ अपने डॉक्टरों पर भी विचार करना चाहिए, जो अक्सर मरीजों को महंगी और गैर-जरूरी दवाइयां लिख देते हैं। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन से ये भी कहा था कि अगर आप एक उंगली किसी की ओर उठाते हैं, तो चार उंगलियां आपकी ओर भी उठती हैं।

तत्पश्चात् अंग्रेजी दवाओं की पड़ताल होने लगी या कहो अंग्रेजी दवाओं की कीमतों पर ऊँगली उठने लगी। निकल कर सामने आई टीवी-9 की वह रिपोर्ट जिसने अंगेजी दवाओं की कम्पनियों और डॉक्टर्स की पोल-पट्टी खोली थी कि अंग्रेजी दवाओं के इलाज और दवा पर होने वाले खर्च की वजह से देश में हर साल 3 करोड़ 8 लाख लोग गरीबी रेखा से नीचे चले जाते हैं। ये दर्द लोगों को उन गोलियों से मिलता है, जो एक ओर उनकी बीमारी दूर करने के काम आती हैं। लेकिन दूसरी ओर जेब पर गोले की तरह गिरकर उन्हें आर्थिक तौर पर बीमार बना देती है और तो और कोरोना काल में तो इन कंपनियों ने भयंकर लूट मचाई थी।

थोडा पीछे चलें तो सितंबर 2020 में डॉ. अनिरुद्ध मालपानी की सोशल मीडिया पर पोस्ट वायरल हुई थी। जिसमें आइवरमेक्टिन 12 एमजी टैबलेट के पत्ते की तस्वीरे रखकर दिखाया था कि मैन्यूफैक्चरिंग डेट वाली एक गोली की कीमत 19 रुपये 50 पैसे बैठती है। जो अक्टूबर 2020 की मैन्युफैक्चरिंग डेट वाले पैक में बढ़कर 35 रुपये प्रति गोली हो जाती है। लेकिन आप चौंक जाएंगे कि इसी आइवरमेक्टिन 12 एमजी टैबलेट की अलग-अलग कंपनियों में बनी एक गोली की एमआरपी 1 रुपये 70 पैसे से लेकर 58 रुपये पचास पैसे तक है।

ये सिर्फ एक दवा की कहानी नहीं है, बल्कि सैकड़ों दवाओं की हैं, जो हिन्दुस्तान में बनती हैं, बिकती हैं। देश में दवाओं की कीमत नियंत्रित करने के लिए एनपीपीए यानी नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी है। देश में 10 हजार से ज्यादा दवाइयां बनाई और बेची जाती हैं। लेकिन इनमें से सिर्फ 874 एसेंशियल ड्रग की कीमतों को सरकार कंट्रोल करती है।

मतलब ये कि 874 को छोड़कर बाकी दवाओं को फार्मा कंपनियां कहने के लिए तो एमआरपी पर बेच रही हैं। लेकिन हकीकत में मनमाफिक दाम वसूल रही हैं। लेकिन ये एमआरपी तय कैसे होता है? दरअसल फार्मा कंपनियां दवा बनाती हैं, इनमें से सरकार कुछ दवाओं की एमआरपी तय करती है, कुछ की नहीं। कंपनियां अपनी लागत और मुनाफा जोड़कर डिस्ट्रीब्यूटर को देती हैं। डिस्ट्रीब्यूटर 16 प्रतिशत मार्जिन पर रिटेलर्स को देते हैं और रिटेलर्स 8 प्रतिशत मार्जिन पर बेचते हैं।

देश में करीब इनमें 90 फीसदी से ज्यादा प्राइवेट कंपनियां हैं। इन प्राइवेट कंपनियों के दांव-पेंच इतने शक्तिशाली और सरकार के कानून इतने कमजोर हैं कि भारत में मरीजों का मर्ज से पीछा छूटने के बाद भी महंगी दवाओं का दर्द सालों-साल सालता रहता है।

अब ऐसे में सवाल ये है कि आखिर महंगी दवाओं के जंजाल से लोग कैसे बच सकते हैं? तो उसका जवाब है, ब्रांडेड दवाओं की जगह जेनेरिक दवाओं का इस्तेमाल करके। दरअसल किसी मरीज का इलाज करते समय डॉक्टर तमाम तरह के परहेज करने की सलाह देते हैं। लेकिन बहुत सारे डॉक्टरों को खुद भी एक चीज से परहेज है और वो है जेनेरिक दवाएं। जेनेरिक दवा, मतलब किसी भी दवा का केमिकल नाम, जिसे साल्ट भी कहा जाता है। मान लीजिए आपको बुखार आया है, आपने पैरासिटामॉल नाम की दवा खाई, तो ये एक जेनरिक दवा हुई। इसके केमिकल का नाम भी पैरासिटामॉल ही है, लेकिन जब पैरासिटामॉल साल्ट से बनी गोलियों पर बड़ी-बड़ी कंपनियों के नाम वाला रैपर लग जाता है, तो वो ब्रांडेड हो जाती हैं। जो महंगे दामों पर बिकती हैं। जेनेरिक में पैरासिटामॉल 500एमजी की 1 गोली 2 रुपये की पड़ती है, लेकिन ब्रांडेड होती इसकी एक गोली की कीमत बढ़कर 11 से 17 रूपये तक हो जाती है।

जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं का ये फर्क बाकी दवाओं में भी देखा जा सकता है। आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली कुछ और दवाओं के उदाहरण से इसे समझिए। जैसे सिप्रोफ्लोक्सासिन जो आमतौर पर बैक्टीरियल इंफेक्शन में दी जाती है। इसकी 500एमजी की एक टैबलेट की कीमत जेनेरिक में 1 रुपये 85 पैसे पड़ती है। जो ब्रांडेड होते ही 4 रुपये की हो जाती है। डायक्लोफेनाक जोड़ों में दर्द और सूजन के इलाज मे इस्तेमाल होती है, जो ब्रांडेड में 20 तक की पड़ती है, लेकिन जेनेरिक में इसकी कीमत 3 रुपये 30 पैसे पड़ती है। निमेसुलाइड जिसका इस्तेमाल बुखार और दर्द में किया जाता है। उसकी एक गोली की कीमत जेनेरिक में 2 रुपये पड़ती है, जो ब्रांडेड में बढ़कर साढ़े 5 रुपये हो जाती है।

साल्ट वही है, दवा वही है, तकनीक वही है। अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर एक ही साल्ट से बनने वाली दवाओं के दाम ये फर्क क्यों! दरअसल दवाएं बनाने के लिए केमिकल को दवा की शक्ल में ढालने का काम किया जाता है। एक ही कंपनी जेनरिक और ब्रांडेड दोनों तरह की दवाएं बनाती हैं, लेकिन अपनी कंपनी के बैनर के तले बन रही ब्रांडेड दवा को बेचने के लिए कंपनी पैकेजिंग, सप्लाई और मार्केटिंग पर पूरा जोर लगा देती हैं। लाखों रुपये खर्च किए जाते हैं। डॉक्टर्स से लेकर केमिस्ट तक को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लालच देकर दवा प्रमोट करने के लिए कहा जाता है।

ये काम कम्पनी के एमआर यानि मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव करते है जो डॉक्टर्स से डील करते है कि अगर आप हमारी ब्रांडेड दवा मरीज के लिए लिखेंगे तो हम आपको गाड़ी देंगे या हॉस्पिटल में इतने पंखे या एसी लगवा देंगे। कई तरह के लालच दिए जाते हैं। अब बहुत से डॉक्टर किसी खास कंपनी की ही दवाई लिखने के लिए

- जारी पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रहित में उठाए गए मुद्दों की श्रृंखला में

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन

3

नशा हटाइए-देश बचाइए

महर्षि दयानन्द जी 'गोकरुणानिधि' पुस्तक में लिखते हैं— ''मनुष्य मद्य पीने, नशे के कारण मंद बुद्धि होकर अकर्त्तव्य कर लेता है और कर्त्तव्य को छोड़ देता है। न्याय का अन्याय आदि विपरीत कर्म करता है और मद्य उत्पत्ति विकृत पदार्थों से होती है और वह मांसाहारी अवश्य हो जाता है, इसलिए इसके पीने से आत्मा में विकार उत्पन्न होते हैं। वह विद्या आदि गुणों से रहित होकर उन दोषों में फंसकर अपने धर्म, अर्थ, काम-मोक्ष को छोड़ पशुवत आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि करने में लीन होकर अपने मनुष्य जन्म को व्यर्थ कर देता है, इसलिए नशा अर्थात् मद्य कारक द्रव्यों को सेवन कभी नहीं करना चाहिए।''

सत्य घटनाओं पर आधारित सॅम्पूर्ण पुस्तक स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं : पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

'मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया, हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया।' आज भी यह गाना नई पीढ़ी के मुंह से खूब सुना जा सकता है। हालांकि युवा मन को जोश व उमंग की उम्र कहा जाता है। यही उम्र का पड़ाव होता है, जब भविष्य को लेकर युवा मन द्वारा लक्ष्य साधा जाता है। दुर्भाग्यवश आज वो युवा नशे की गिरफ्त में जकड़ा जा रहा है। शायद यह गाना सुनकर ऐसा ही एहसास होता कि परिवार की जिम्मेदारी अपने पारिवारिक एवं सामाजिक कर्त्तव्य कोई मायने नहीं रखते, इंसान पैदा होकर हर फिक्र को धुएं में उड़ा सकता है! जबकि हमारे समाज में नशे को सदा बुराइयों का प्रतीक ही माना गया है। लेकिन आजकल नशा यानी शराब, सिगरेट इसके अलावा अन्य सस्ते एवं महंगे नशे का सेवन अब बुराई का नहीं बल्कि आधुनिकता का प्रतीक बनता जा रहा है। जबकि सब जानते हैं कि नशे के सेवन से मानव के विवेक के साथ सोचने-समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है। वह अपने हित-अहित और भले-बुरे का अंतर नहीं समझ पाता।

31 दिसम्बर 2022 को भाजपा सांसद और केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर ने ट्वीट करके एक अपील करते हुए लिखा था कि—''मैंने एक गलती करके अपने नशा करने वाले लड़के की शादी कर दी, जिसकी वजह से आज मेरी बहू विधवा हो गई। अब कोई और लड़की विधवा न हो। इसलिए अपनी लड़कियों की शादी किसी भी नशा करने वाले व्यक्ति से न करें। चाहे वह कितने बड़े पद, पोस्ट पर हो और चाहे कितना ही वह अमीर हो।'' नए साल की पूर्व संध्या पर जब इस संदेश को ट्वीट करके सांसद ने अपना दर्द जाहिर किया तो लोग भावुक हो गए।

यह केवल एक सांसद के घर की कहानी नहीं है। यदि नशे की पीड़ा से जूझते समाज के बीच जाकर हर एक दरवाजा खोला जाये, तो न जाने ऐसी कितनी कहानी, कितने किस्से निकल पड़ेंगे। आज समाज को तीन चीजें आगे लेकर बढ़ रही है साहित्य, धर्म और सिनेमा इंडस्ट्री देखा जाये तीनों ही अपना गैर जिम्मेदाराना व्यवहार अपना रहे हैं। विडम्बना देखिये आप तीर्थस्थानों पर जाओ या तथाकथित बाबाओं के आश्रमों में, उनके हाथ में चिलम दिखाई देती है। साहित्य भी आज दिन पर दिन विषैला होता जा रहा है। इसके बाद सिनेमा के उदहारण तो सभी लोग जानते हैं। इन सबका शिकार आज हमारा युवा हो रहा है।

नशा पहले से है पर आंकड़े बताते हैं कि गत सालों में नशे के सेवन में काफी वृद्धि हुई है। अमीर से लेकर गरीब तक और बच्चे से लेकर युवाओं तक इस लत के शिकार हो रहे हैं। शराब के अतिरिक्त गांजा, अफीम और दूसरी नशीली चीजें भी काफी प्रचलन में हैं। शराब कानूनी रूप से प्रचलित है तो गांजा-अफीम आदि प्रतिबंधित होने के बावजूद चलन में हैं। देश में करीब 21.4 प्रतिशत लोग शराब के नशे के शिकार हैं। तीन प्रतिशत लोग भांग-गांजे का सेवन करते हैं। 0.7 प्रतिशत लोग अफीम और 3.6 प्रतिशत लोग प्रतिबंधित ड्रग लेते हैं। 0.1 प्रतिशत लोग इंजेक्शन के जरिए जानलेवा ड्रग के शिकार हैं।

एक सर्वे के अनुसार भारत में गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले लगभग 37 प्रतिशत लोग नशे का सेवन करते हैं। उनके मुखिया मजदूरी के रूप में जो कमाकर लाते हैं उसे वे शराब पीने में फूंक डालते हैं। इन लोगों को अपने परिवार की चिंता नहीं है कि उनके बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं। ऐसे युवाओं की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है, जिनका कहना है कि वे गम को भुलाने के लिए नशे का सेवन करते हैं। जबकि उनका परिवार आर्थिक संकट से जूझ रहा है।

किसी भी देश का भविष्य उसकी उर्जा युवाओं के हाथों में होती है अगर युवा ही लड़खड़ा गया तो उस देश का भविष्य कैसे आगे बढ़ सकता है। पिछले दिनों अनेकों ऐसी खबरें सुनी-पढ़ी, जिनमें स्कूल-कॉलेजों के बाहर सस्ते नशे बिकते दिखे, स्कूल ड्रेस में बच्चे उन दुकानों पर सिगरेट पीते दिखते हैं, मगर कोई कुछ नहीं कहता। अगर ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले कुछ वर्षों में युवाओं की बड़ी फौज को नशा जकड़ चुका होगा। अवैध कारोबार को फैलाने के लिए माफिया स्कूल के आस-पास नश का सामान बिकवा रहे हैं। स्कूल में पढ़ने वाले भोले-भाले युवकों को फंसाकर नशे की आदत डाल रहे हैं। एक बार जो युवा नशे की जकड़ में गया, फिर उसका बाहर निकलना असंभव सा हो जाता है।

आज से 50 साल पहले किस ने कल्पना की होगी कि हमारे देश के हर 10 से 20 किलोमीटर के एरिया में नशामुक्ति केंद्र होंगे? किन्तु आज बन चुके हैं! कितने घरों की कुण्डी खड़काओ, कितने घरों की डोर बेल बजाओ! बहुत कम घर ऐसे मिलेंगे जिन घरों में सस्ते या महंगे नशों का इस्तेमाल न किया जा रहा हो! जहाँ आज से 30 साल पहले नशा करने वालों को समाज खुलेतौर पर स्वीकार तक नहीं करता था। किन्तु आज देखें तो नशा करने वालों का समाज ही बड़ा आकार लेता दिख रहा है। मेट्रो शहरों में हुक्का बार से लेकर बियर बार धड़ल्ले से चल रहे हैं, जिनमें बड़ी संख्या में युवक-युवतियां ही नजर आने लगे हैं।

इसके देखा-देखी आज समाज में युवा और किशोर ही नहीं बल्कि कम उम्र की लड़कियों में भी बियर और सिगरेट पीने का चलन खूब बढ़ रहा है। पिछले कुछ दिनों में हमें बहुत से ऐसे परिवार मिले जो यह कहते दिखे कि हमने तो अपने बच्चों को इन सब चीजों से बचाने के लिए घर में टेलीविजन नहीं लिया, बच्चों को कंप्यूटर दिला दिया। बच्चे कहाँ तक बचेंगे! टीवी पर तो फिर भी सरकारी गाइडलाइन थी इंटरनेट पर तो वो भी नहीं।

दूसरा—फिल्मों की भूमिका को हिंसा, अपराध, नशाखोरी जैसी बुराइयों को प्रोत्साहित करने में उसके योगदान को कैसे खारिज किया जा सकता है? सभी जानते हैं कि सिगरेट पीना स्वास्थ के लिए हानिकारक है, बावजूद इसके हिंदी सिनेमा के पर्दे पर धुएं का छल्ला खूब उड़ता है। किसी को शौक, किसी को तनाव तो कोई गम और कोई खुशी में पीता है।

पिछले कुछ सालों में मनोचिकित्सक भी इस बात को मानते आये कि नशे के दृश्यों का असर युवाओं और किशोरों पर होता है यानि धूम्रपान करने वाले चरित्रों को अक्सर महान् व्यक्तित्व या विशेष रूप से सबसे प्रमुख व्यक्ति के तौर पर दिखाया जाता है। परिणाम भयावह है। देश के कई राज्य हैं ऐसे जो नशे की भरपूर गिरफ्त में हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया में भारत मादक पदार्थों का सबसे बड़ा बाजार बनता जा रहा है। 2009-11 में 1.4 अरब डॉलर के ड्रग का कारोबार भारत में हुआ। इन आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में नशे के कारोबार में किस हद तक सक्रिय हैं और नशे के चलते न जाने कितनी घटनाएँ, मनुष्यता को शर्मसार कर चुकी हैं।

आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में जो माता-पिता अपने युवा हो रहे बच्चों पर ध्यान नहीं दे रहे, उसके घातक परिणाम उनके सामने आ भी रहे हैं। किन्तु आज हमें केवल परिणाम देखकर या उदहारण देकर बच निकलना नहीं है बल्कि समाज में एक बड़ा आन्दोलन खड़ा करने की जरूरत है। आज ये समय नहीं है कि परिवार में कई सदस्य हैं, चलो एक नशे का आदि हो गया, सब्र कर लिया, नहीं! आज किसी के यहाँ एक बेटा है तो किसी के यहाँ एक बेटी। एक तो परिवार सीमित ऊपर से वो भी नशा पीड़ित, तो सोचिये आगे क्या होगा?

एक युवा सिर्फ एक परिवार का सहारा ही नहीं होता है। वो समाज एवं राष्ट्र का भी रक्षक होता है। वो युवा ही कल आई.ए.एस. बनेगा, वो ही डॉक्टर, जज, पुलिसकर्मी, राजनेता, सेना के सिपाही से वैज्ञानिक तक वही बनेगा। सिर्फ इतना ही नहीं, वो ही माता-पिता बनेंगे, अगर आज वो ही नशे की जकड़ में रहेगा, तो सोचिये कैसा होगा राष्ट्र का भविष्य? अगर यह परिवार, समाज एवं राष्ट्र का रक्षक नशे में लिप्त हो गया तो आगे की भयावह कल्पना आप स्वयं कर सकते हैं।

घटनाएं लगातार सामने आती रहती हैं। 31 दिसम्बर, 2012 की काली रात जब चार युवक नशे का शिकार होकर एक लड़की को 12 किलोमीटर तक गाड़ी से घसीटते रहे थे। अगर अभी भी नशे के विरुद्ध सामाजिक आन्दोलन नहीं किया गया, जन जागृति पैदा नहीं की गई तो आने वाला समय ऐसी खबरों से समाचार-पत्र भर रहा होगा और हम नि:शब्द होकर सोच रहे होंगे कि काश समय रहते हर घर की कुण्डी खटखटाई होती, हर घर की डोर बेल बजाई होती तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता।

महर्षि दयानन्द जी 'गोकरुणानिधि' पुस्तक में लिखते हैं—''मनुष्य मद्य पीने, नशे के कारण मंद बुद्धि होकर अकर्त्तव्य कर लेता है और कर्त्तव्य को छोड़ देता है। न्याय का अन्याय आदि विपरीत कर्म करता है और मद्य उत्पत्ति विकृत पदार्थों से होती है और वह मांसाहारी अवश्य हो जाता है, इसलिए इसके पीने से आत्मा में विकार उत्पन्न होते हैं। वह विद्या आदि गुणों से रहित होकर उन दोषों में फंसकर अपने धर्म, अर्थ, काम-मोक्ष को छोड़ पशुवत आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि करने में लीन होकर अपने मनुष्य जन्म को व्यर्थ कर देता है, इसलिए नशा अर्थात् मद्य कारक द्रव्यों को सेवन कभी नहीं करना चाहिए।''

वैसे भांग आदि पदार्थ भी मादक हैं इसलिए इसका सेवन कभी न करें क्योंकि ये बुद्धि का नाश करके प्रमाद, आलस्य और हिंसा आदि में मनुष्य को लगा देते हैं इसलिए मद्यपान के समान इनका भी सर्वथा निषेध ही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखते हैं कि—'अनेक प्रकार के मद्य गांजा, अफीम आदि-आदि जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें...।'

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

'वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः - हम राष्ट्र को जगाने वाले पुरोहित बनें' ....

अतिथियों को स्मृति चिह्न देकर सम्मान : श्री सुधांशु त्रिवेदी जी, श्री ओम प्रकाश धनखड़, श्री वीरेन्द्र सचदेवा जी, श्री विजेन्द्र गुप्ता, बांसुरी स्वराज, प्रवीण खण्डेलवाल, को सम्मानित करते सर्वश्री स्वामी सच्चिदानन्द, कीर्ति शर्मा, विनय आर्य, सतीश चड्डा, जोगेन्द्र खट्टर, सुरेन्द्र रैली, अरुण प्रकाश वर्मा, राकेश आर्य, मनीष भाटिया, नितिज्जय चौधरी, डालेश त्यागी, ज्योतिभूषण ओबरॉय, राजकुमार गुप्ता, अजय कालरा, रवि हंस एवं अजय भाटिया।

अम्बेडकर इंटर नेशनल ऑडोटोरियम के प्रांगण में राष्ट्रवाद एक चिन्तन कार्यक्रम भव्य समारोह के रूप में संपन्न हुआ। इस अवसर पर राज्य सभा सांसद एवं विश्व विख्यात विद्वान प्रवक्ता श्री सुधांशु त्रिवेदी जी, श्री अश्वनी उपाध्याय जी, स्वामी सच्चिदानंद जी, राजार्य सभा के अध्यक्ष आर्य श्री रविदेव गुप्ता जी, भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सचदेवा जी, दिल्ली के प्रभारी श्री ओ.पी. धनखड़ जी, लोकसभा उम्मीदवार सुश्री बांसुरी स्वराज जी, श्री प्रवीन खण्डेलवाल जी, श्री विजेन्द्र गुप्ता जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, समस्त वेद प्रचार मण्डल और आर्य समाजो के अधिकारी उपस्थित रहें। दीप प्रज्जवलन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

श्री कुलदीप आर्य जी के राष्ट्रभक्ति के प्रेरक भजनों से सारा वतावरण भक्तिमय हो गया। इसके उपरान्त श्री अश्वनी उपाध्याय जी ने अपने उद्बोधन में हिन्दू संस्कृति, संस्कारों, त्यौहारों औद सिद्धान्तों का आदर्श प्रस्तुत करते हुए चिंतन व्यक्त किया और आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि आज उपरोक्त तथ्यों को मानने वालो की संख्या 8 प्रतिशत घटी है, जबकि इनको न मानने वालो की संख्या 43 प्रतिशत बढ़ी है। आपने बढ़ते अपराध और स्त्रियों के अपमान और तिरस्कार का हवाला देते हुए कहा कि भय बिन होय न प्रीत। प्रशासनिक दण्ड व्यवस्था कठोर होनी ही चाहिए, इसलिए दवा बदलें डॉक्टर नही। आपने पूर्वोत्तर के राज्यों में घटती हुई हिन्दुओं की संख्या पर भी चिन्तन व्यक्त किया और समान शिक्षा, समान अधिकार, समान कानून आदि की भी बात कही। राजार्य सभा के अध्यक्ष श्री रविदेव गुप्ता जी ने कहा कि पूर्वजों के तप, त्याग और बलिदान का आधार पर ही हमें आजादी मिली, हमें उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्र को जागृत रखने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए महर्षि दयानंद सरस्वती का उदघोष ओर आर्य समाज के मूल सिद्धान्त हमें राष्ट्र के प्रति सजग करते हैं। आपने वर्तमान में चल रहे चुनावों में प्रजातन्त्र का हवाला देते हुए चिन्ता व्यक्त की और कहा आज 55 प्रतिशत वोटिंग का आंकड़ा अपने आप में बहुत ही विचारणीय है। इसलिए हम 5 प्रस्ताव ज्ञापन के रूप में भविष्य में आने वाली भारत सरकार को अवश्य देगें जोकि निम्न प्रकार है-

(1) मतदान अनिवार्य हो, मत प्रयोग न करे तो उसे दण्ड दिया जाय।

(2) संविधान में प्रवाधान लागू हो, अनिमियतता को दूर करें।

(3) सामाजिक समरस्ता, इण्डियन सिविल कोड को लागू करें।

(4) दण्ड व्यवस्था त्वरित और सबके लिए समान हो।

(5) देशद्रोही और बलात्कारी को फांसी दी जाय।

उपरोक्त पांचो प्रस्तावों को आर्यजनो के समूह में ओम् ध्वनि और महर्षि दयानंद के जयघोष के साथ स्वीकृति दी। इसके उपरान्त स्वामी सच्चिदानंद जी ने महर्षि के राष्ट्रवादी बैचारिक चिन्तन को प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि की शिक्षाओं पर चलकर ही समाज का सुधार हो सकता है और राष्ट्र की रक्षा हो सकती है आपने महर्षि के वाक्य को प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज भी बहुत से जयचंद यहां पर हैं इसलिए आपसी फूट का फायदा उठा रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश के 13, 14 वें समुल्लास में महर्षि ने ईस्लाम और वांमपंथ की विचारधारा और षड़यंत्र का पर्दाफास किया था अत: हमें अपने मत का प्रयोग करना चाहिए और राष्ट्र के प्रति सजग रहना चाहिए। सभा के महामंत्री जी श्री विनय आर्य जी ने अपनी चिरपरिचित शैली में उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज राजनीतिक संगठन नहीं है, हम किसी भी प्रकार की राजनीति को सर्पोट नही करते लेकिन राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है, यात्रा तभी आगे बढ़ती है जब हम गैयर लगाते हैं न्यूटल रहकर आगे नही बढ़ा जा सकता, किनारे पर खड़े होकर हम तमाशा नही देख सकते, इसलिए आर्य समाज जैसे सत्संग करता है वैसे ही चुनाव को राष्ट्रीय पर्व मानकर मतदान करें। आर्य समाज राष्ट्रवाद के साथ है और राष्ट्र की उन्नति ही हमारा उद्देश्य है।

इस अवसर पर भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सचदेवा जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती को राष्ट्रीय पर्व बताते हुए उन्हें राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रभक्ति का आधार स्तम्भ बताया। उन्होंने कहा कि 150 वर्ष पूर्व ही महर्षि ने घर वापिसी और अनेक अन्य समाज सुधार के कार्य तथा देश भक्ति का पथ हमें दिखाया था। हम सबके लिए महर्षि की प्रेरणा एक अमृत है। श्री ओ.पी. धनकड़ जी ने नमस्ते से अपना उदबोधन शुरू किया और आर्य समाज के आंदोलनकारी संगठन तथा सेवा कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्य समाज सदा से मानव जाति को जागृत करता आया है और भारत को विश्वगुरु बनाने में आर्य समाज का योगदान आगे भी रहेगा। महर्षि दयानंद और आर्य समाज के विचार राष्ट्र के उत्थान की प्रेरणा है। आइए हम संकल्प करें कि हम अपने वोट के अधिकार का प्रयोग अवश्य करेंगे।

श्री सुधांशु त्रिवेदी जी ने अपने प्रेरक उदबोधन में कहा कि आज महर्षि दयानंद के संकल्प लगातार शाकार हो रहे हैं, उन्होंने वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहित की व्याख्या करते हुए कहा कि राष्ट्र अभी जागृत हुआ ही है अभी तो बहुत कार्य शेष है। उत्तिष्ठ जागृत प्राप्यवरान निबोधत् उठो, जागो और प्राप्त करो। आपने अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता 'हिन्दू तन-मन..

- जारी पृष्ठ 7 पर

विदेश समाचार

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर बांग्लादेश में आचार्य आनन्द पुरुषार्थी द्वारा वेद प्रचार

3 मई को ढाका में विशेष कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए सभा महामन्त्री, श्री विनय आर्य

19 अप्रैल से 18 मई तक एक मास की अवधि में ढाका, रंगपुर दिनाजपुर, पिरोज़पुर, बरीशल सिटी, दुर्गापुर, चित्तग्राम, बांग्लादेश यूनिवर्सिटी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, सैदपुर, पटुआ खाली मेडिकल कॉलेज सहित अनेक स्थानों पर हुए प्रचार कार्यक्रम

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाएं और आर्य समाज के सिद्धान्त और मान्यताऐं सार्वभौमिक हैं तथा संपूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी हैं। महर्षि की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारक आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी 18 अप्रैल 2024 को वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए बांग्लादेश पहुँचे। आपने एक महीने की प्रचार यात्रा में बांग्लादेश के विभिन्न स्थानों पर यज्ञ, प्रवचन और यज्ञोपवीत संस्कार कराए। वहां पर हर आयु वर्ग के लोग उत्साह पूर्वक कार्यक्रमों में संमलित हुए। इस बीच बांग्लादेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुरोध ा पर 2 मई 2024 को सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी बांग्लादेश की राजधानी ढाका पहुँचे। 3 मई 2024 को विश्व यज्ञ दिवस का विशेष आयोजन किया गया, जिसमें पहली बार 51 कुण्डीय यज्ञ में सैकड़ों यजमानों ने आहुति दी। इस अवसर पर सैकड़ों युवक युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण किया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ असीम सरकार ने किया, बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के नायक मेजर (सेवानिवृत) आलोक कुमार गुप्ता मुख्य अतिथि रहे। श्री विनय आर्य जी ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए बांग्लादेश की युवा पीढ़ी से महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलने का आह्वान किया। आपने युवा पीढ़ी को वैदिक संस्कार अपनाने और दुर्गुण-दुर्व्यसनों से दूर रहने की शलाह दी। इसके साथ ही बांग्लादेश यूनीवर्सिटी ऑफ इंजीनियरिग एण्ड टेक्नोलॉजी के प्रांगण में विशेष आयोजन रखा गया, जिसमें सैकड़ों विद्यार्थीयों ने वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का ज्ञान और महत्त्व अर्जित किया। अधिक व्यस्तता के कारण विनय आर्य जी तो भारत वापिस आ गये लेकिन आचार्य अनंद पुरुषार्थी जी का कार्य अभी लगातार चल रहा है। समाचार लिखे जाने तक अनंद पुरुषार्थी जी ने बांग्लादेश के कई स्कूलों, गांव, शहर और कस्बों में सैंकड़ो युवाओं को यज्ञोपवीत धारण कराया। आर्य प्रतिनिधि सभा बांग्लादेश के अधिकारियों का प्रचार कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा।

प्रथम पृष्ठ का शेष

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष की कार्ययोजना हेतु दो दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न

किसी भी छोटे बड़े आयोजन से पूर्व सुदृढ़ योजना का निर्माण करना आर्य समाज की सदा से परम्परा रही है। लेकिन जब बात आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस की हो, तो यह कार्य और भी विशेष महत्व को दर्शाता है। आर्य समाज की इसी आदर्श परम्परा के परिणाम स्वरूप महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में एक बढ़कर एक ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित किए गए। इसी भव्यता और विशालता को ध्यान में रखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति की दो दिवसीय चिंतन बैठक 11-12 मई 2024 को आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य , आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, मध्य भारत सभा के प्रधान श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य एवं सम्पूर्ण भारत से सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारी, प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभा प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी की अध्यक्षता में गायत्री मन्त्र और ईश्वर स्तुति प्रार्थना मंत्रों से बैठक का शुभारंभ हुआ, श्री प्रकाश आर्य जी ने सर्व प्रथम सभी अधिकारियों के समक्ष विचार रखा कि आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस कैसे मनाएँ? किस-किस तरह से आयोजन करें, इस पर सभी प्रांतीय अधिकारियों ने विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी सम्मानित अधिकारियों ने आर्य समाज के प्रचार प्रसार और विस्तार के लिए विशेष योजना और सुझाव प्रस्तुत किए।आज का यह दिन अपने आप में विशेष चिंतन और विशेष योजनाओं के निर्धारण के लिए समर्पित रहा।

12 मई को ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी की उपस्थिति में बैठक के चिंतन का सार बताते हुए श्री विनय आर्य जी ने कहा कि नए लोगों तक जाने का जो सम्पर्क महा अभियान है, उसमें प्रत्येक व्यक्ति 200 परिवारों तक पहुंचेगा, अगर कोई 100 या 150 अथवा इससे भी कम लोगों तक जाए, लेकिन सबको प्रयासरत होना ही चाहिए। आर्य समाज और महर्षि दयानंद का संदेश हर व्यक्ति तक,हर घर तक पहुँचे और आर्य समाज का साहित्य चाहे उसमें बच्चों के लिए कॉमिक्स हो अथवा एक निमन्त्रण या आर्य समाज का परिचय सब को कुछ न कुछ अवश्य दिया जाना चाहिए। आपने श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी के विषय में बताया कि आप विचार टी वी के चेयरमैन हैं, विशुद्धा प्रोजैक्ट के माध्यम से आर्य मीडिया सेंटर को आप लगातार गति दे रहे हैं, पंचकुला केंद्र उसे भी आप आगे बढ़ा रहे हैं, जिसमें श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी का निर्देशन और सहयोग अदभुत है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी को टंकारा कार्यक्रम की एक एल्बम भेंट की गई, जिसमें उनका पूरा परिवार महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के कार्यक्रम में अग्रणी भूमिका निभाता रहा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी को भी टंकारा कार्यक्रम की एलबम भेंट की गई और श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी को होली मंगल मिलन समारोह की एल्बम भेंट की गई।

इस विशेष चिंतन बैठक में प्रांतीय प्रभारी, संभाग, जिला और तहसील स्तर

– शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

गढ़ से टक्कर

गतांक से आगे -

स्वामी विशुद्धानन्द जी- प्रकरण के बाहर है तो क्या हुआ? यदि तुम्हें इसका समाधान आता है तो कह दो।'

महर्षि दयानन्द- इसका पूर्वापर-पाठ देखकर समाधान किया जा सकता है।'

स्वामी विशुद्धानन्द- यदि सब कुछ याद न था तो काशी में शास्त्रार्थ करने क्यों आए थे?

महर्षि दयानन्द- क्या तुम्हें सब कुछ कण्ठाग्र है?

'स्वामी विशुद्धानन्द- हां, हमें सब कुछ स्मरण है।'

यहां उल्टा वार प्रारम्भ हुआ। पेंच में आता-आता चतुर सिपाही निकल गया। महर्षि दयानन्द ने पूछा तब बताइये धर्म के लक्षण कितने हैं?'

स्वामी विशुद्धानन्द ने सर्वज्ञता का दावा तो किया, परन्तु उन्हें मनुस्मृति का धर्मलक्षण-सम्बन्धी धृतिक्षमा दमोस्तेयम् इत्यादि श्लोक याद नहीं था, वह निरुत्तर हो गए। महर्षि दयानन्द ने श्लोक पढ़ सुनाया। इस पर प्रसिद्ध धर्माचार्य पं० बाल शास्त्री जी मदद पर आ पहुंचे। आपने कहा कि हमने सम्पूर्ण धर्मशास्त्र का अध्ययन किया है, इस विषय में कुछ पूछना चाहते हो तो हमसे पूछिये। महर्षि दयानन्द ने पूछा-आप अधर्म के लक्षण बतलाइये।

बाल शास्त्री जी ने कभी सोचा भी न था कि कोई आदमी अधर्म के लक्षण भी पूछ सकता है। उन्हें निरुत्तर होना पड़ा।

इसी प्रकार प्रश्नोत्तर होते रहे। मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में काशी के पण्डितों ने दो ही बातें पेश कीं। एक तो यह कि वेद में प्रतिमा शब्द आया है, वह मूर्ति का वाचक है; और दूसरा यह कि उद्बुध्यस्वाग्ने इत्यादि मंत्र में जो पूर्त शब्द आया है, वह मूर्तिपूजा का सूचक है। महर्षि जी ने दोनों का ही समाधान कर दिया। ईश्वर की प्रतिमा का वेद में स्पष्ट निषेध है, और पूर्त शब्द नदी-तड़ाग आदि का वाचक है। यह समाधान करके महर्षि जी बारम्बार यही पूछते रहे कि वेद में मूर्तिपूजा का विधान कहां है?'

हर तरह से लाचार पण्डित- मण्डली ने चालाकी की शरण ली। इस विषय पर शास्त्रार्थ करने से टलकर पण्डित लोग महर्षि जी को उलझाने की नीयत से पुराणों के विषय पर विवाद करने लगे, परन्तु शीघ्र ही अनुभव करने लगे कि यह व्यूह भी अभेद्य नहीं है। महर्षि जी ने अवसर पाकर व्याकरण-सम्बन्धी प्रश्न पण्डितों के सामने रखे तो कोई भी सन्तोषजनक उत्तर न मिला। पण्डित लोग खिन्न और हताश होने लगे। तब माधवाचार्य जी आगे बढ़े और कोई दो पत्रों को लाकर बीच में रखते हुए कहा कि यहां पर लिखा है कि यज्ञ की समाप्ति पर यजमान दसवें दिन पुराणों का पाठ-श्रवण करें, अब महर्षि जी बताइये कि पुराण किसका विशेषण है?

महर्षिजी-आप पाठ पढ़कर सुनाइये।'

स्वामी विशुद्धानन्द जी ने पत्रों को स्वामी जी के हाथ में पकड़ाकर कहा कि आप ही पढ़ लीजिये।'

महर्षि जी- आप ही पढ़ लीजिये।'

स्वामी विशुद्धानन्द जी बोले- मैं चश्मे के बिना नहीं पढ़ सकता, इसलिए आप ही को पढ़ना होगा।

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Rishi Dayananda Saraswati's Influence Outside of India

Continue From Last Issue

- Ashwini K. Rajpal,
Vancouver Canada
email: iffvs1@gmail.com

Trinidad. First *girmit* arrivals May 30, 1845. According to the 1891 census about 86% of *girmitiyas* in Trinidad were Hindus. Most of them were well acquainted with the principles of *Arya Samaj*, and hence the visits of *Arya Samaj* preachers to Trinidad, were well received. The earliest efforts to organize the *Arya Samaj* movement was made in 1910 by *Bhai Parmanand* who was passing through on his way to Guyana.

He was followed by *Pandit Kunj Beharry Tiwari* from Guyana in 1914. *Pandit Hariprasad* was a *girmitiya* to this colony who continued the work of *Pandit Tiwari* and received good cooperation from other *girmitiyas* in the propagation of *Arya Samaj's* ideology and work.

Mehta Jaimini arrived on December 17, 1928 and his efforts resulted in two *Arya Samajs*, one school and three night *paathashaalaas*. *Pandit Ayodhya Prasad* arrived in 1933 after attending the World Fellowship of Faiths convention in Chicago. The *Arya Samaj* community was so impressed with him that he was asked to prolong his stay for three years. *Pandit Ji* brought many Christians into the *Arya Samaj* fold. *Pandit Ayodhya's* dynamic personality radiated spiritual energy and charm, wielded great influence on the *girmitiya* community and he was not afraid to attack the orthodox Hindu pandits or the Christian church which led to several threats against him and his followers. He educated Hindus in their religious beliefs and teachings of the *Veda* and assisted in restoring self-respect and dignity among the *girmitiyas.*

Professor Bhaskaranand visited while based in Guyana. He was followed by *Pandit Narayan Datta* and *Pandita Janki Deva* (his *dharampatni*) in 1940 and they left in 1947. *Pandit Rishi Ram* arrived in 1947 with *Brihaspati* and *Pandit Parmanand Mishra* in 1948. All provided yeoman service unto *Arya Samaj* and its population increased. The *Arya Pratinidhi Sabha* owns and operates nine primary schools.

South Africa. First *girmit* arrivals – November 16, 1860.

Indians who had settled in Natal (South Africa) were acquainted with the principles and activities of *Arya Samaj* in India. Among them was *Mohkam Chand Varma* who had requested *Bhai Parmanand's* visit who arrived on August 5, 1905. He started his work from Durban and later shifted to Pietermaritzburg. *Bhai Parmanand* established *Hindu Sudhar Sabha* and Hindu Youngmen Association to help Indians remain in touch with their roots.

To be Continue.....

शोक समाचार

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय का निधन

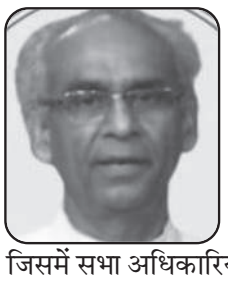

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी का दिनांक 11 मई, 2024 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 12 मई को लोधी रोड शमशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 14 मई, 2024 को आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ अनेक संस्थाओं के अधिकारियों, सदस्यों एवं विद्वानों एवं संन्यासी महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री प्रवीण तायल जी को मातृशोक

आर्यसमाज पूर्वी शालीमार बाग की संरक्षिका एवं उद्योगपति श्री प्रवीण तायल जी की पूज्य माताजी श्रीमती मिथलेश रानी जी का 3 मई, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 12 मई, 2024 को आर्यसमाज बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली सभा के अधिकारियों के साथ अन्य अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री अशोक सहगल जी का निधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व महामन्त्री एवं आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के प्रधान श्री अशोक सहगल जी का 8 मई, 2024 को लगभग 77 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 मई, 2024 को आर्यसमाज राजेन्द्र नगर में सम्पन्न हुई, जिमसें विभिन्न संगठनों एवं संस्थाओं के अधिकरियों की उपस्थिति रही।

श्री सतीश कुमार मिगलानी का निधन

आर्यसमाज किरण गार्डन, नई दिल्ली के उप प्रधान श्री सतीश कुमार मिगलानी जी का दिनांक 7 मई, 2024 को लगभग 76 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 10 मई, 2024 को आर्यसमाज जनकपुरी, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के अधिकारियों के साथ अन्य अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 5 का शेष

हर स्तर पर 200 नए परिवारों तक पहुंचने के .....

पर अधिकारी नियुक्त करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए अधिकांश अधिकारी नियुक्त भी कर दिए गए।

इस बैठक में विशेष निर्णय यह भी लिया गया है कि सभी प्रांतों में अपनी प्रांतीय भाषाओं में वेबसाइट बनायी जाएं, अपनी प्रांतीय भाषाओं में पुस्तकें और कॉमिक्स प्रकाशित किए जाएं, सोशल मीडिया पर एक्टिव रहें और आर्य समाज के प्रचार को नए आयाम तक पहुँचाने के लिए सभी संकल्प करें। हर स्तर पर गांव-शहर में हर मनुष्य तक पहुँचने का प्रयास किया जाए, जो जहाँ पर है वहीं से महर्षि दयानंद और आर्यसमाज के प्रचार प्रसार को अंजाम दे, तीनों पुस्तक परिवर्तन, चुनौतियों का चिंतन और समझे तो क्या है आर्य समाज ? इनको 200लोग तक पहुँचाने का लक्ष्य रखें।

इस अवसर पर श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में कहा कि जिस उद्देश्य से चिंतन शिविर का आयोजन किया गया, उसमें उपस्थित आर्य जनों ने विचार व्यक्त किये। हमने बड़े आयोजन किए हैं, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, राष्ट्रपति और देश-विदेश तक आर्य समाज की आवाज़ गई है। आर्यसमाज टंकारा की टीम ने जो कार्य किया है, वह अपने आप में अद्भुत और अविस्मरणीय है, वहाँ कि महिला टीम ने यज्ञ से लेकर शोभा यात्रा और हर कार्य को ऐतिहासिक सफलता दिलायी है। सुरेंद्र आर्य जी ने धन से विशेष सहयोग किया, आपका सहयोग प्रशंसनीय हैं, अब आर्य समाज का स्थापना वर्ष चल रहा है और इसका विशेष आयोजन होगा और बड़ा होगा। बड़े-बड़े कार्यक्रम तो हम सफलता पूर्वक करते रहे हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर भी हमें कार्य करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति तक आर्य समाज के विचार और महर्षि दयानन्द की शिक्षाएं पहुँचाने का लक्ष्य रखें। 150 वां स्थापना दिवस अवश्य सफल होगा।

श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने आर्य समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सफलता के लिए सभी आर्यजनों को बधाई देते हुए कहा कि जो अभी पिछले कार्यक्रम को टंकारा की टीम और दिल्ली की टीम ने अद्भुत सफलता प्रदान की, जिसमें राष्ट्रपति आए और बड़ा सफल कार्यक्रम रहा, इसके लिए सभी को बहुत बहुत बधाई और अब अन्य कार्यक्रम जो होने हैं उनमें ज्यादा से ज्यादा की ज़मीनी तौर पर लोगों को जोड़ें। 200 लोगों तक ज़रूर पहुँचे, मैं भी दो सौ लोगों से संपर्क अवश्य करूँगा, अपनी फोटो अवश्य खिंचवाएं और उसे सोशल मीडिया पर पोस्ट करें, क्योंकि फोटो से एक वातावरण बनता है। महर्षि के अमर वाक्यों की एक हज़ार पुस्तकें छपवाई हैं, मैं सबको बांटूंगा, 2025 में 150 वाँ स्थापना दिवस मनाया जाएगा और जिस समाज की स्थापना महर्षि दयानंद ने की थी, काकड़वाड़ी से मेरा बहुत जुड़ाव रहा है, वहाँ मैं जाता रहा हूँ, मैं भी बंबईया हूँ, लेकिन मेरी जड़ें हरियाणा में हैं। पूरे देश में कार्यक्षेत्र है, 17 प्लांट बाहर भी हैं। हम सबको मिलजुलकर सभी कार्यों को आगे बढ़ाना है।

इस अवसर पर केरल से आचार्य एम राजेश जी भी पधारे और उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती पर केरल में हम 200 स्थानों पर कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं और वहाँ पर हम महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रयासरत हैं। डॉ राजेश जी का और उनके साथ में उपस्थित मंत्री जी कां पीत वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। दोनों दिन सभी अधिकारियों ने बहुत ही सकारात्मक भाव से आर्य समाज के स्थापना दिवस की भव्यता और विशालता पूर्ण आयोजन की योजना को मूर्त रूप प्रदान करने में विशेष सहयोग और सदभाव प्रदर्शित किया।

पृष्ठ 4 का शेष

.....' को आधार बनाकर जन जागरण का संदेश दिया। देश की बढ़ती अर्थ व्यवस्था और चौमुखी विकास का हवाला देते हुए महर्षि दयानंद की प्रेरणा और सत्य के प्रकाश को आधार बताया। आपने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश केवल आर्य समाज का ही नही बल्कि पूरे देश और विश्व को सन्मार्ग दिखाने वाला ग्रंथ है महर्षि गुजराती थे, उनकी भाषा गुजराती थी लेकिन उन्होंने हिन्दी भाषा में ग्रन्थ लिखे और हिन्दी को सम्मान दिलाने का कार्य किया। 1875 में आर्य समाज की स्थापना हुई तब से लेकर आर्य समाज लगातार राष्ट्र सेवा के कार्य करता आ रहा है। आपने भारत की गरिमा का बखान करते हुए अयोध्या में और गुजरात में सौर ऊर्जा के प्रयोग की बात कही। आधुनिक भारत के निर्माण में महर्षि दयानंद का योगदान सबसे बड़ा है। आपने वेदों की महिमा का बखान करते हुए वेदों गणित, वेदों में आर्युवेद और संगच्छध्वं-संवदध्वं का संदेश दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री रवि देव गुप्ता, कीति शर्मा, जोगेन्द्र खट्टर विनय आर्य, आर्य सतीश चड्ढा, सुरेश चंद्र गुप्ता, सुभाष ढींगरा, राकेश आर्य, नितिन्जय चौधरी, कृपाल सिंह,ज्योति ओबरॉय, पीयूष शर्मा, गजेंद्र सिह चौहान, डॉ मुकेश आर्य का विशेष सहयोग मिला। - **संयोजक**

पृष्ठ 2 का शेष

क्या आयुर्वेद को बदनाम कर मोटा मुनाफा कमाती हैं .....

40 प्रतिशत तक कमीशन लेते हैं। डॉक्टर अपनी पढ़ाई और मरीज का रोग देखकर नहीं, कौन सी कंपनी ज्यादा कमीशन देगी, ये देखकर दवाई लिख देते हैं। आजकल तो फार्मा कम्पनियां डॉक्टरों को विदेशी ट्रिप करा रही हैं, आखिर क्यों ?

नतीजा ये होता है कि जब मरीज उन डॉक्टरों के पास पहुंचता है, जिन पर दवा कम्पनियां मेहरबान होती हैं। तो वो डॉक्टर जेनरिक दवाई की जगह ब्रांडेड दवाएं लिखकर दवा कम्पनियों का कर्ज उतार देते हैं और दूसरी ओर अगर साधारण केमिस्ट शॉप पर जाकर कोई जेनेरिक दवा मांग ले, तो वो इनकार कर देते हैं।

अपने देश में 6 से 8 लाख मेडिकल स्टोर हैं, उसमें सिर्फ 4-5 हजार जनऔषधि दुकानें हैं। यानी 1 प्रतिशत से कम, अगर आप साधारण मेडिकल स्टोर पर जाएंगे, तो जेनेरिक नाम से मेडिसिन मिलेगी ही नहीं। जेनेरिक दवाओं को कम असरदार बताते हुए, उस कंपनी की दवा थमा देते हैं जिस पर मोटा मार्जिन मिलता है। जबकि सच ये है कि जेनरिक दवाएं भी ब्रांडेड दवाओं जितनी ही कारगर हैं, वैसा ही इलाज करती हैं जैसा ब्रांडेड दवाएं। लेकिन भारत में वहम की बीमारी और महंगे चीज को ही अच्छा मानने की मानसिकता, दवाओं के नाम पर बेहिसाब मुनाफाखोरी के खत्म नहीं होने की एक बड़ी वजह है।

दूसरी वजह है कुछ डॉक्टरों, केमिस्ट और दवा कंपनियों की सांठगांठ चलती है जिसे लोग चाहें तो जेनेरिक दवाओं को अपनाकर तोड़ सकते हैं। दवाओं के दाम से जेब कटने से बचा सकते हैं। लेकिन यह माफिया इतना बड़ा हो चुका है कि एक या दो के करने से नहीं बल्कि जब लोग बड़ी संख्या में इन दवा माफियाओं के खिलाफ उतरेंगे तब ही आम आदमी बच सकता है। इस जंग में अगर जीत जेनरिक की हुई, तो देश में हर साल दवाओं के दाम चुका-चुकाकर कंगाल हो रहे करोड़ों लोगों को गरीबी के दलदल में धंसने से बचाया जा सकेगा। सरकार भी डॉक्टरों से जेनेरिक दवाई लिखने की अपील कर चुकी हैं लेकिन फिर भी बहुत से डॉक्टर अब भी जेनेरिक दवा लिखने से परहेज कर रहे हैं। यहां पर हम एक बात साफ कर देना चाहते हैं कि देश के सारे डॉक्टर्स ऐसा नहीं करते हैं। इसलिए हम देश के तमाम डॉक्टर्स से अपील करना चाहते हैं कि वो भी मुनाफे के लिए महंगी दवाओं के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए आगे आएं और आप लोग भी जेनेरिक दवाओं को लेकर जागरूक हों। रही बात इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की तो वो आयुर्वेद को छोड़कर अंग्रेजी दवा कम्पनियों पर ध्यान दें जैसा उन्हें सुप्रीम कोर्ट ने भी नसीहत दी है।

- ***सम्पादक***

पृष्ठ 3 का शेष

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों ....

चिन्तन और समाधान—

आज इस बात का चिन्तन जरूरी है कि आखिर इस नशे के बढ़ चुके कारोबार को बढ़ाने का षड्यंत्र कर कौन रहा है, आखिर किसी की तो जरूरत इससे पूरी होती होगी ? कहीं यह भारत के नौजवानों की दुनियाभर में बढ़ती धमक को रोकने का षड्यंत्र तो नहीं ? कहीं यह भारत के भविष्य को कमजोर करके समाप्त कर देने का पड्यंत्र तो नहीं ?

सिर्फ एक उदहारण से समझिये— किसी का घर बर्बाद करना हो तो उसके एक युवा को नशे की लत लगवा दो और कुछ करने की जरूरत नहीं। बाद में वो खुद अपनी ही जमीन-जायदाद, पैसे से अपना शरीर, अपना घर, अपना परिवार, बर्बाद करने के लिए पर्याप्त है! सोचिये अगर नशे से परिवार तबाह हो सकते है तो राष्ट्र क्यों नहीं ?

हमें यह वास्तविक षड्यंत्र समझना होगा। अब देश के दुश्मनों से एक लड़ाई सीमा पर ही नहीं घर-परिवार के अन्दर भी लड़ी जा रही है। नशे के लिए हम अक्सर सिर्फ युवाओं को ही दोष देते हैं, वास्तव में वो अकेला युवा दोषी नहीं है, वह पीड़ित भी है। असली दोषी तो वो हैं जो हमारे समाज एवं राष्ट्र को समाप्त करने के लिए अपने षड्यंत्र का शिकार, हमारे युवा को नेश का आदि बना रहे हैं।

पहले नशा बेचो, धन कमाओ, उसकी बुद्धि और जवानी बर्बाद करो और जब तेजहीन और बलहीन होकर बीमार हो जाये, तब उन्हें अपनी दवाइयां बेचो, उससे फिर पैसा कमाओ। आप देखेंगे कि वास्तविकता में बहुत बड़ी संख्या में आज युवा इस चक्र में फंस चुका है। आखिर ये नशे का पैसा किसकी जेब में जा रहा है और दवाओं से कमाई कौन कर रहा है ? सोचना तो हमें ही है।

यह एक किस्म का आर्थिक एवं राजनितिक षड्यंत्र है, जिसमें युवा को अपराधी बनाया जा रहा है, असल में वह शिकार है, वह दोषी नहीं, विक्टिम है।

समाधान—इस षड्यंत्र का दूसरा कोई समाधान नहीं है, अगर समाधान है तो प्रेम से समझाने का, उसे जगाने का, युवा को इस षड्यंत्र की गहराई बताने का, वरना सदियों की गुलामी से बाहर आया ये भारत जो आज विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर है, पुन: नशे के गुमनाम अँधेरे में गुम हो जाएगा।

समाधान है इसकी चर्चा करना, युवाओं को दोष न देकर, उनसे सहानुभूती पूर्वक व्यवहार करना, जिनको मालूम ही नहीं कि वो किस षड्यंत्र की गिरफ्त में आ चुका है, अपने निकट लाकर आहिस्ता-आहिस्ता इनसे दूर करने की कोशिश करना तो हमारा उद्देश्य अवश्य सफल हो सकेगा।

बच्चों की हर एक गतिविधि, मेल-जोल पर नजर रखें, क्योंकि इसकी शुरुआत ही खतरनाक है। नशे के व्यापार की कोई भी जानकारी मिले, लोकल पुलिस को अवश्य बतायें। बच्चों से नशे के विरुद्ध, भाषण, कविताएं और सार्वजनिक जगहों पर प्रतिज्ञा करवाएं। हम बचेंगे तो ही देश को बचाने की भूमिका में रहेंगे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 13 मई, 2024 से रविवार 19 मई, 2024
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 16-17-18/05/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 मई, 2024

ओ३म्

(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की प्रान्तीय इकाई)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश (पंजी०)

(सान्निध्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में)

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण शिविर

स्थान: एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली 110026

दिनांक: बुद्धवार 22 मई से शनिवार 1 जून 2024 तक

उद्घाटन: 26 मई, रविवार सायं 5 बजे

समापन: 1 जून, शनिवार सायं 4:00 बजे

मान्यवर महोदय नमस्ते

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आयोजित एवं आर्य समाज की स्थापना के वर्ष 2025 में 150 वर्ष पूर्ण होने के महा-पावन उपलक्ष पर, दल ने 200 शाखाओ के संचालन का संकल्प लिया है इस हेतु इस वर्ष विशेष शिविर का आयोजन किया जा रहा है

जयपुर (राजस्थान) में आवासीय अध्यात्म शिविर

16 से 19 मई, 2024 : स्थान - 'हीना हैरिटेज रिसोर्ट (रेडफोर्ट होटल, आमेर, जयपुर-दिल्ली रोड) सहयोग राशि 6000/- प्रति साधक। प्रशिक्षण : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक। स्थान सीमित - संपर्क करें - 94163 00534, 9649216000

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश

(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश की महिला प्रांतीय इकाई)

के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक: 2 जून, 2024 रविवार से 9 जून, 2024 रविवार तक

स्थान: डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर 7 रोहिणी, दिल्ली

माननीय महोदय,

क्या आप चाहते हैं कि आपके परिवार की बेटियां निर्भीक-निडर होकर इस समाज में रहें। क्या आपकी बेटी समाज व राष्ट्र के प्रति जागरूक हों, और वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत हों, यदि हाँ?......तो इनको आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश के शिविर में अवश्य भेजें। इस शिविर में इनको आत्मरक्षा गुणों के साथ व्यक्तित्व विकास, योग्य शिक्षिकाओं द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

उद्घाटन समारोह
सोमवार 3 जून, 2024
(सायं 5:00 बजे)

!! कार्यक्रम !!

भव्य समापन समारोह
रविवार 9 जून, 2024
(सायं 4:00 बजे)

ओ३म्

वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प

इच्छुक युवा अपना विस्तृत आवेदन पत्र निम्न अनुसार भेजें

दिल्ली एवं देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता

वांछित योग्यताएँ

- युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो
- आर्य समाज के प्रचार प्रसार की हार्दिक इच्छा रखता हो
- यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में सक्षम हो
- गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो
- आर्य वीर दल से प्रशिक्षित युवाओं को वरीयता दी जाएगी

चयनित अभ्यर्थी को भाषा, ज्ञान, अनुभव व निपुणता के आधार पर उपयुक्त स्थानों पर नियुक्ति की जाएगी। सम्मानित मानदेय के अतिरिक्त वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, व आवश्यकता होने पर आवास की सुविधा दी जाएगी।

आवेदन भेजने की अंतिम तिथि 30 मई 2024

लिखित, मौखिक परीक्षा एवं साक्षात्कार 5-6 जुलाई 2024

1 अगस्त से 30 सितम्बर तक आवासीय प्रशिक्षण

अपना स्वविवरण निम्न पते पर भेजें
(नाम, पता, फोन नं, अध्ययन, योग्यता, अनुभव)

डाक : संयोजक, वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
संपर्क सूत्र: 9650183335, 9990232164
E-mail: aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹60, प्रचारार्थ मूल्य ₹40	विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹100, प्रचारार्थ मूल्य ₹60	पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100	स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹120	उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100, प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — 250, 160	सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — 300, 200	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह